(अ) काव्य भाग

1

- आत्मपरिचय
- एक गीत

–हरिवंश राय बच्चन

कवि परिचय

जीवन परिचय—कविवर हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवंबर सन 1907 को इलाहाबाद में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी विषय में एम०ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1942-1952 ई० तक यहीं पर प्राध्यापक रहे। उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय, इंग्लैंड से पी-एच०डी० की उपाधि प्राप्त की। अंग्रेज़ी कवि कीट्स पर उनका शोधकार्य बहुत चर्चित रहा। वे आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से संबंद्ध रहे और फिर विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ रहे। उन्हें राज्यसभा के लिए भी मनोनीत किया गया। 1976 ई० में उन्हें 'पद्मभूषण' से अलंकृत किया गया। 'दो चट्टानें' नामक रचना पर उन्हें साहित्य अकादमी ने भी पुरस्कृत किया। उनका निधन 2003 ई० में मुंबई में हुआ।

रचनाएँ—हरिवंश राय बच्चन की प्रमुख रचनाएँ निम्नलिखित हैं–

(*i*) **काव्य-संग्रह**–मधुशाला (1935), मधुबाला (1938), मधुकलश (1938), निशा-निमंत्रण, एकांत संगीत, आकुल-अंतर, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए-पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ।

(*ii*) **आत्मकथा**–क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक।

(*iii*) **अनुवाद**–हैमलेट, जनगीता, मैकबेथ।

(*iv*) **डायरी**–प्रवासी की डायरी।

काव्यगत विशेषताएँ—बच्चन हालावाद के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से एक हैं। दोनों महायुद्धों के बीच मध्यवर्ग के विक्षुब्ध विकल मन को बच्चन ने वाणी दी। उन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता की बजाय सीधी-सादी जीवंत भाषा और संवेदना से युक्त गेय शैली में अपनी बात कही। उन्होंने व्यक्तिगत जीवन में घटी घटनाओं की सहजअनुभूति को ईमानदार अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से की है। यही विशेषता हिंदी काव्य-संसार में उनकी प्रसिद्धि का मूलाधार है।

भाषा-शैली—कवि ने अपनी अनुभूतियाँ सहज स्वाभाविक ढंग से कही हैं। इनकी भाषा आम व्यक्ति के निकट है। बच्चन का कवि-रूप सबसे विख्यात है उन्होंने कहानी, नाटक, डायरी आदि के साथ बेहतरीन आत्मकथा भी लिखी है। इनकी रचनाएँ ईमानदार आत्मस्वीकृति और प्रांजल शैली के कारण आज भी पठनीय हैं।

कविताओं का प्रतिपाद्य एवं सार

आत्मपरिचय

प्रतिपाद्य—कवि का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज़्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता। क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। कवि अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। वह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है– *उन्मादों में अवसाद, रोदन में राग, शीतल वाणी में आग, विरुद्धों का विरोधाभासमूलक सामंजस्य साधते-साधते ही वह बेखुदी, वह मस्ती, वह दीवानगी व्यक्तित्व में उतर आई है कि दुनिया में हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं हूँ। बाज़ार से गुज़रा हूँ, खरीदार नहीं हूँ*–जैसा कुछ कहने का ठस्सा पैदा हुआ है। यह ठस्सा ही छायावादोत्तर गीतिकाव्य का प्राण है। किसी असंभव आदर्श की तलाश में सारी दुनियादारी ठुकराकर उस भाव से कि जैसे दुनिया से इन्हें कोई वास्ता ही नहीं है।

सार—कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। वह निरर्थक कल्पनाओं में विश्वास नहीं रखता क्योंकि यह संसार कभी भी किसी की इच्छाओं को पूर्ण नहीं कर पाया है। कवि सुख-दुख, यश-अपयश, हानि-लाभ आदि द्वंद्वात्मक परिस्थितियों में एक जैसा रहता है। यह संसार मिथ्या है, अतः यहाँ स्थायी वस्तु की कामना करना व्यर्थ है। कवि संतोषी

प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के ज़रिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना मानता है। संसार उसे कवि कहता है, परंतु वह स्वयं को नया दीवाना मानता है। वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

एक गीत

प्रतिपाद्य—**निशा-निमंत्रण** से उद्धृत इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयाम के पगों की गति में चंचल तेज़ी भर सकता है—अन्यथा हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने के अभिशिप्त हो जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुज़रते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुज़रने का जज़्बा भी लिए हुए है।

सार—कवि कहता है कि साँझ घिरते ही पथिक लक्ष्य की ओर तेज़ी से कदम बढ़ाने लगता है। उसे रास्ते में रात होने का भय होता है। जीवन-पथ पर चलते हुए व्यक्ति जब अपने लक्ष्य के निकट होता है तो उसकी उत्सुकता और बढ़ जाती है। पक्षी भी बच्चों की चिंता करके तेज़ी से पंख फड़फड़ाने लगते हैं। अपनी संतान से मिलने की चाह में हर प्राणी आतुर हो जाता है। आशा व्यक्ति के जीवन में नई चेतना भर देती है। जिनके जीवन में कोई आशा नहीं होती, वे शिथिल हो जाते हैं। उनका जीवन नीरस हो जाता है। उनके भीतर उत्साह समाप्त हो जाता है। अत: रात जीवन में निराशा नहीं, अपितु आशा का संचार भी करती है।

व्याख्या एवं अर्थग्रहण संबंधी प्रश्न

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर सप्रसंग व्याख्या कीजिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) आत्मपरिचय

1. *मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ,*
फिर भी जीवन में प्यार लिए फिरता हूँ;
कर दिया किसी ने झंकृत जिनको छूकर
मैं साँसों के दो तार लिए फिरता हूँ!

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ! (पृष्ठ–5)

[*CBSE (Delhi), 2014*] **|*Imp.*|**

शब्दार्थ—***जग-जीवन***—सांसारिक गतिविधि। ***झंकृत***—तारों को बजाकर स्वर निकालना। ***सुरा***—शराब। ***स्नेह***—प्रेम। ***पान***—पीना। ***ध्यान करना***—परवाह करना। ***गाते***—प्रशंसा करते।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित कविता 'आत्मपरिचय' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध गीतकार **हरिवंश राय बच्चन** हैं। इस कविता में कवि जीवन जीने की शैली बताता है तथा दुनिया से अपने द्वंद्वात्मक संबंधों को उजागर करता है।

व्याख्या—बच्चन जी कहते हैं कि मैं संसार में जीवन का भार उठाकर घूमता रहता हूँ। इसके बावजूद मेरा जीवन प्यार से भरा-पूरा है। जीवन की समस्याओं के बावजूद कवि के जीवन में प्यार है। उसका जीवन सितार की तरह है जिसे किसी ने छूकर झंकृत कर दिया है। फलस्वरूप उसका जीवन संगीत से भर उठा है। उसका जीवन इन्हीं तार रूपी साँसों के कारण चल रहा है। उसने स्नेह रूपी शराब पी रखी है अर्थात प्रेम किया है तथा बाँटा है। उसने कभी संसार की परवाह नहीं की। संसार के लोगों की प्रवृत्ति है कि वे उनको पूछते हैं जो संसार के अनुसार चलते हैं तथा उनका गुणगान करते हैं। कवि अपने मन की इच्छानुसार चलता है, अर्थात वह वही करता है जो उसका मन कहता है।

विशेष—(*i*) कवि ने निजी प्रेम को स्वीकार किया है।
(*ii*) संसार के स्वार्थी स्वभाव पर टिप्पणी की है।
(*iii*) 'स्नेह-सुरा' व 'साँसों के तार' में रूपक अलंकार है।
(*iv*) 'जग-जीवन', 'स्नेह-सुरा' में अनुप्रास अलंकार है।
(*v*) खड़ी बोली का प्रयोग है।
(*vi*) 'किया करता हूँ', 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति में गीत की मस्ती है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *जगजीवन का भार लिए फिरने से कवि का क्या आशय है? ऐसे में भी वह क्या कर लेता है?*

(ख) *आशय स्पष्ट कीजिए–*
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते।

(ग) *'साँसों के तार' से कवि का क्या तात्पर्य है? आपके विचार से उन्हें किसने झंकृत किया होगा?*

उत्तर (क) 'जगजीवन का भार लिए फिरने' से कवि का आशय है–सांसारिक रिश्ते-नातों और दायित्वों को निभाने की जिम्मेदारी, जिन्हें न चाहते हुए भी कवि को निभाना पड़ रहा है। ऐसे में भी उसका जीवन प्रेम से भरा-पूरा है और वह सबसे प्रेम करना चाहता है।

(ख) 'जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते' का आशय है–यह संसार उन लोगों की स्तुति करता है जो संसार के अनुसार चलते हैं और उसका गुणगान करते हैं।

(ग) 'साँसों के तार' से कवि का तात्पर्य है–उसके जीवन में भरा प्रेम रूपी तार, जिनके कारण उसका जीवन चल रहा है। मेरे विचार से उन्हें कवि की प्रेयसी ने झंकृत किया होगा।

2. *मैं निज उर के उद्‌गार लिए फिरता हूँ,*
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ;
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ!

मैं जला हृदय में अग्नि, दहा करता हूँ,
सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ;
जग भव-सागर तरने को नाव बनाए,
मैं भव-मौजों पर मस्त बहा करता हूँ! (पृष्ठ-5)

[Imp.]

शब्दार्थ—***उद्‌गार***—दिल के भाव। ***उपहार***—भेंट। ***भाता***—अच्छा लगता। ***स्वप्नों का संसार***—कल्पनाओं की दुनिया। ***दहा***—जला। ***भव-सागर***—संसार रूपी सागर। ***मौजों***—लहरों।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित कविता '**आत्मपरिचय**' से अवतरित है। इसके रचयिता प्रसिद्ध गीतकार **हरिवंश राय बच्चन** हैं। इस कविता में कवि जीवन को जीने की शैली बताता है। साथ ही दुनिया से अपने द्वंद्वात्मक संबंधों को उजागर करता है।

व्याख्या—कवि अपने मन की भावनाओं को दुनिया के सामने कहने की कोशिश करता है। उसे खुशी के जो उपहार मिले हैं, उन्हें वह साथ लिए फिरता है। उसे यह संसार अधूरा लगता है। इस कारण यह उसे पसंद नहीं है। वह अपनी कल्पना का संसार लिए फिरता है। उसे प्रेम से भरा संसार अच्छा लगता है।

वह कहता है कि मैं अपने हृदय में आग जलाकर उसमें जलता हूँ अर्थात मैं प्रेम की जलन को स्वयं ही सहन करता हूँ। प्रेम की दीवानगी में मस्त होकर जीवन के जो सुख-दुख आते हैं, उनमें मस्त रहता हूँ। यह संसार आपदाओं का सागर है। लोग इसे पार करने के लिए कर्म रूपी नाव बनाते हैं, परंतु कवि संसार रूपी सागर की लहरों पर मस्त होकर बहता है। उसे संसार की कोई चिंता नहीं है।

विशेष—(*i*) कवि ने प्रेम की मस्ती को प्रमुखता दी है।
(*ii*) व्यक्तिवादी विचारधारा की प्रमुखता है।
(*iii*) 'स्वप्नों का संसार' में अनुप्रास तथा 'भव-सागर' और 'भव मौजों' में रूपक अलंकार है।
(*iv*) खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।
(*v*) तत्सम शब्दावली की बहुलता है।
(*vi*) शृंगार रस की अभिव्यक्ति है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न **(क)** *कवि के हृदय में कौन-सी अग्नि जल रही है? वह व्यथित क्यों है?*
(ख) *'निज उर के उद्‌गार व उपहार' से कवि का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।*
(ग) *कवि को संसार अच्छा क्यों नहीं लगता?*

उत्तर (क) कवि के हृदय में एक विशेष आग (प्रेमाग्नि) जल रही है। वह प्रेम की वियोगावस्था में होने के कारण व्यथित है।

(ख) 'निज उर के उद्‌गार' का अर्थ यह है कि कवि अपने हृदय की भावनाओं को व्यक्त कर रहा है। 'निज उर के उपहार' से तात्पर्य कवि की खुशियों से है जिसे वह संसार में बाँटना चाहता है।

(ग) कवि को संसार इसलिए अच्छा नहीं लगता क्योंकि उसके दृष्टिकोण के अनुसार संसार अधूरा है। उसमें प्रेम नहीं है। वह बनावटी व झूठा है।

3. *मैं यौवन का उन्माद लिए फिरता हूँ,*
उन्मादों में अवसाद लिए फिरता हूँ,
जो मुझको बाहर हँसा, रुलाती भीतर,
मैं, हाय, किसी की याद लिए फिरता हूँ!

कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना?
नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना!
फिर मूढ़ न क्या जग, जो इस पर भी सीखे?
मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना! (पृष्ठ-5-6)

[CBSE (Outside), 2008]

शब्दार्थ—***यौवन***—जवानी। ***उन्माद***—पागलपन। ***अवसाद***—उदासी, खेद। ***यत्न***—प्रयास। ***नादान***—नासमझ, अनाड़ी। ***दाना***—चतुर, ज्ञानी। ***मूढ़***—मूर्ख। ***जग***—संसार।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग-2**' में संकलित कविता '**आत्मपरिचय**' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध गीतकार **हरिवंश राय बच्चन** हैं। इस कविता में कवि जीवन को जीने की शैली बताता है। साथ ही दुनिया से अपने द्वंद्वात्मक संबंधों को उजागर करता है।

व्याख्या—कवि कहता है कि उसके मन पर जवानी का पागलपन सवार है। वह उसकी मस्ती में घूमता रहता है। इस दीवानेपन के कारण उसे अनेक दुख भी मिले हैं। वह इन दुखों को उठाए हुए घूमता है। कवि को जब किसी प्रिय की याद आ जाती है तो वह बाहर से हँसा जाती है, परंतु उसका मन रो देता है अर्थात याद आने पर कवि-मन व्याकुल हो जाता है।

कवि कहता है कि इस संसार में लोगों ने जीवन-सत्य को जानने की कोशिश की, परंतु कोई भी सत्य नहीं जान पाया। इस कारण हर व्यक्ति नादानी करता दिखाई देता है। ये मूर्ख (नादान) भी वहीं होते हैं जहाँ समझदार एवं चतुर होते हैं। हर व्यक्ति वैभव, समृद्धि, भोग-सामग्री की तरफ भाग रहा है। हर व्यक्ति अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए भाग रहा है। वे इतना सत्य भी नहीं सीख सके। कवि कहता है कि मैं सीखे हुए ज्ञान को भूलकर नई बातें सीख रहा हूँ अर्थात सांसारिक ज्ञान की बातों को भूलकर मैं अपने मन के कहे अनुसार चलना सीख रहा हूँ।

विशेष–(*i*) पहली चार पंक्तियों में कवि ने आत्माभिव्यक्ति की है तथा अंतिम चार में सांसारिक जीवन के विषय में बताया है।
(*ii*) 'उन्मादों में अवसाद' में विरोधाभास अलंकार है।
(*iii*) 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति से गेयता का गुण उत्पन्न हुआ है।
(*iv*) 'कर यत्न मिटे सब, सत्य किसी ने जाना' पंक्ति में अनुप्रास अलंकार है।
(*v*) 'नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना' में सूक्ति जैसा प्रभाव है।
(*vi*) खड़ी बोली है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *कवि की मन:स्थिति कैसी है?*
(ख) *'नादान' कौन है तथा क्यों?*
(ग) *संसार के बारे में कवि क्या कह रहा है?*

उत्तर (क) कवि संसार के समक्ष हँसता दिखाई देता है, परंतु अंदर से वह रो रहा है क्योंकि उसे अपनी प्रिया की याद आ जाती है।
(ख) कवि ने स्वार्थी तथा भौतिकवाद की चाह में लगे लोगों को 'नादान' कहा है। वे यह नहीं समझ पाते कि संसार असत्य है, मायाजाल है।
(ग) कवि संसार के बारे में कहता है कि यहाँ लोग जीवन-सत्य जानने के लिए प्रयास करते हैं, परंतु वे कभी सफल नहीं हुए। जीवन का सच आज तक कोई नहीं जान पाया।

4. *मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,*
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता!

मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ। (पृष्ठ–6)

[*CBSE Sample Paper-1, 2008*]

शब्दार्थ—*नाता*—संबंध। *वैभव*—समृद्धि। *पग*—पैर। *रोदन*—रोना। *राग*—प्रेम। *आग*—जोश। *भूप*—राजा। *प्रासाद*—महल। *निछावर*—कुर्बान। *खंडहर*—टूटा हुआ भवन। *भाग*—हिस्सा।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग—2**' में संकलित कविता '**आत्मपरिचय**' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध गीतकार **हरिवंश राय बच्चन** हैं। इस कविता में कवि जीवन को जीने की शैली बताता है। साथ ही दुनिया से अपने द्वंद्वात्मक संबंधों को उजागर करता है।

व्याख्या—कवि कहता है कि मुझमें और संसार–दोनों में कोई संबंध नहीं है। संसार के साथ मेरा टकराव चल रहा है। कवि अपनी कल्पना के अनुसार संसार का निर्माण करता है, फिर उसे मिटा देता है। यह संसार इस धरती पर सुख के साधन एकत्रित करता है, परंतु कवि हर कदम पर धरती को ठुकराया करता है। अर्थात वह जिस संसार में रह रहा है, उसी के प्रतिकूल आचार-विचार रखता है। कवि कहता है कि वह अपने रोदन में भी प्रेम लिए फिरता है। उसकी शीतल वाणी में भी आग समाई हुई है अर्थात उसमें असंतोष झलकता है। उसका जीवन प्रेम में निराशा के कारण खंडहर-सा है, फिर भी उस पर राजाओं के महल न्योछावर होते हैं। ऐसे खंडहर का वह एक हिस्सा लिए घूमता है जिसे महल पर न्योछावर कर सके।

विशेष—(*i*) कवि ने अपनी अनुभूतियों का परिचय दिया है।
(*ii*) 'कहाँ का नाता' में प्रश्न अलंकार है।

(iii) 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' में विरोधाभास अलंकार तथा 'बना-बना' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(iv) 'और' की आवृत्ति में यमक अलंकार है।

(v) 'कहाँ का' और 'जग जिस पृथ्वी पर' में अनुप्रास अलंकार की छटा है।

(vi) शृंगार रस की अभिव्यक्ति है तथा खड़ी बोली का प्रयोग है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *कवि और संसार के बीच क्या संबंध है?*

(ख) *कवि और संसार के बीच क्या विरोधी स्थिति है?*

(ग) *'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' –से कवि का क्या तात्पर्य है?*

उत्तर (क) कवि और संसार के बीच किसी प्रकार का संबंध नहीं है। संसार में संग्रह वृत्ति है, कवि में नहीं है। वह अपनी मर्ज़ी के संसार बनाता व मिटाता है।

(ख) कवि को सांसारिक आकर्षणों का मोह नहीं है। वह इन्हें ठुकराता है। इसके अलावा वह अपने अनुसार व्यवहार करता है, जबकि संसार में लोग अपार धन-संपत्ति एकत्रित करते हैं तथा सांसारिक नियमों के अनुरूप व्यवहार करते हैं।

(ग) उक्त पंक्ति से तात्पर्य यह है कि कवि अपनी शीतल व मधुर आवाज़ में भी जोश, आत्मविश्वास, साहस, दृढ़ता जैसी भावनाएँ बनाए रखता है ताकि वह दूसरों को भी जाग्रत कर सके।

5. *मैं रोया, इसको तुम कहते हो गाना,*
मैं फूट पड़ा, तुम कहते, छंद बनाना;
क्यों कवि कहकर संसार मुझे अपनाए,
मैं दुनिया का हूँ एक नया दीवाना!
मैं दीवानों का वेश लिए फिरता हूँ,
मैं मादकता नि:शेष लिए फिरता हूँ;
जिसको सुनकर जग झूम, झुके, लहराए,
मैं मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ! (पृष्ठ–6)

[*CBSE Sample Paper-1, 2007*]

शब्दार्थ—**फूट पड़ा**—ज़ोर से रोया। ***दीवाना***—पागल। ***मादकता***—मस्ती। ***नि:शेष***—संपूर्ण।

प्रसंग—प्रस्तुत काव्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक '**आरोह, भाग—2**' में संकलित कविता '**आत्मपरिचय**' से उद्धृत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध गीतकार **हरिवंश राय बच्चन** हैं। इस कविता में कवि जीवन को जीने की अपनी शैली बताता है। साथ ही दुनिया से अपने द्वंद्वात्मक संबंधों को उजागर करता है।

व्याख्या—कवि कहता है कि प्रेम की पीड़ा के कारण उसका मन रोता है। अर्थात हृदय की व्यथा शब्द रूप में प्रकट हुई। उसके रोने को संसार गाना मान बैठता है। जब वेदना अधिक हो जाती है तो वह दुख को शब्दों के माध्यम से व्यक्त करता है। संसार इस प्रक्रिया को छंद बनाना कहती है। कवि प्रश्न करता है कि यह संसार मुझे कवि के रूप में अपनाने के लिए तैयार क्यों है? वह स्वयं को नया दीवाना कहता है जो हर स्थिति में मस्त रहता है। समाज उसे दीवाना क्यों नहीं स्वीकार करता। वह दीवानों का रूप धारण करके संसार में घूमता रहता है। उसके जीवन में जो मस्ती शेष रह गई है, उसे लिए वह घूमता रहता है। इस मस्ती को सुनकर सारा संसार झूम उठता है। कवि के गीतों की मस्ती सुनकर लोग प्रेम में झुक जाते हैं तथा आनंद से झूमने लगते हैं। मस्ती के संदेश को लेकर कवि संसार में घूमता है जिसे लोग गीत समझने की भूल कर बैठते हैं।

विशेष—(i) कवि मस्त प्रकृति का व्यक्ति है। यह मस्ती उसके गीतों से फूट पड़ती है।

(ii) 'कवि कहकर' तथा 'झूम झुके' में अनुप्रास अलंकार और 'क्यों कवि ..... अपनाए' में प्रश्न अलंकार है।

(iii) खड़ी बोली का स्वाभाविक प्रयोग है।

(iv) 'मैं' शैली के प्रयोग से कवि ने अपनी बात कही है।

(v) शृंगार रस की अभिव्यक्ति हुई है।

(vi) 'लिए फिरता हूँ' की आवृत्ति गेयता में वृद्धि करती है।

(vii) तत्सम शब्दावली की प्रमुखता है।

अर्थग्रहण संबंधी प्रश्नोत्तर–

प्रश्न (क) *कवि की ऐसी कौन-सी बातें हैं, जिनका संसार कुछ अलग अर्थ समझता है?*

(ख) *कवि स्वयं को क्या कहना पसंद करता है और क्यों?*

(ग) *कवि संसार को क्या संदेश देता है? संसार पर उसकी क्या प्रतिक्रिया होती है?*

उत्तर (क) कवि कहता है कि जब वह विरह की पीड़ा के कारण रोने लगता है तो संसार उसे गाना समझता है। अत्यधिक वेदना जब शब्दों के माध्यम से फूट पड़ती है तो उसे छंद बनाना समझा जाता है।

(ख) एक गीत

1. *दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!*
हो जाए न पथ में रात कहीं,
मंजिल भी तो है दूर नहीं–
यह सोच थका दिन का पंथी भी जल्दी-जल्दी चलता है!

दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे–
यह ध्यान परों में चिड़ियों के भरता कितनी चंचलता है।
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

प्रश्न **(क)** *काव्यांश की भाषागत दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।*

(ख) *भाव-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए:*
बच्चे प्रत्याशा में होंगे,
नीड़ों से झाँक रहे होंगे।

(ग) *'पथ', 'मंजिल' और 'रात' शब्द किसके प्रतीक हैं?*

उत्तर (क) इस काव्यांश की भाषा सरल, संगीतमयी व प्रवाहमयी है। इसमें दृश्य बिंब है। 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।

(ख) इन पंक्तियों में पक्षियों के वात्सल्य भाव को दर्शाया गया है। बच्चे माँ-बाप के आने की प्रतीक्षा में घोंसलों से झाँकने लगते हैं। वे माँ की ममता के लिए व्यग्र हैं।

(ग) 'पथ', 'मंज़िल' और 'रात' क्रमशः 'मानव-जीवन के संघर्ष', 'परमात्मा से मिलने की जगह' तथा 'मृत्यु' के प्रतीक हैं।

पाठ्यपुस्तक से हल प्रश्न

कविता के साथ

1. *कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ'–विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?*

उत्तर जग-जीवन का भार लेने से कवि का अभिप्राय यह है कि वह सांसारिक दायित्वों का निर्वाह कर रहा है। आम व्यक्ति से वह अलग नहीं है तथा सुख-दुख, हानि-लाभ आदि को झेलते हुए अपनी यात्रा पूरी कर रहा है। दूसरी तरफ कवि कहता है कि वह कभी संसार की तरफ ध्यान नहीं देता। यहाँ कवि सांसारिक दायित्वों की अनदेखी की बात नहीं करता। वह संसार की निरर्थक बातों पर ध्यान न देकर केवल प्रेम पर केंद्रित रहता है। आम व्यक्ति सामाजिक बाधाओं से डरकर कुछ नहीं कर पाता। कवि सांसारिक बाधाओं की परवाह नहीं करता। अतः इन दोनों पंक्तियों के अपने निहितार्थ हैं। ये एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं।

2. *जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं– कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?* [*CBSE (Outside), 2010*]

उत्तर नादान यानी मूर्ख व्यक्ति सांसारिक मायाजाल में उलझ जाता है। मनुष्य इस मायाजाल को निरर्थक मानते हुए भी इसी के चक्कर में फँसा रहता है। संसार असत्य है। मनुष्य इसे सत्य मानने की नादानी कर बैठता है और मोक्ष के लक्ष्य को भूलकर संग्रहवृत्ति में पड़ जाता है। इसके विपरीत, कुछ ज्ञानी लोग भी समाज में रहते हैं जो मोक्ष के लक्ष्य को नहीं भूलते। अर्थात संसार में हर तरह के लोग रहते हैं।

3. *मैं और, और जग और कहाँ का नाता– पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।*

उत्तर यहाँ 'और' शब्द का तीन बार प्रयोग हुआ है। अतः यहाँ यमक अलंकार है। पहले 'और' में कवि स्वयं को आम व्यक्ति से अलग बताता है। वह आम आदमी की तरह भौतिक चीज़ों के संग्रह के चक्कर में नहीं पड़ता। दूसरे 'और' के प्रयोग में संसार की विशिष्टता को बताया गया है। संसार में आम व्यक्ति सांसारिक सुख-सुविधाओं को अंतिम लक्ष्य मानता है। यह प्रवृत्ति कवि की विचारधारा से अलग है। तीसरे 'और' का प्रयोग 'संसार और कवि में किसी तरह का संबंध नहीं' दर्शाने के लिए किया गया है।

4. *'शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय है?*

अथवा

'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ'–इस कथन से कवि का क्या आशय है?

[*CBSE (Outside), 2008 (C); (Delhi), 2011; (Foreign), 2014*]

अथवा

'आत्मपरिचय' में कवि के कथन– 'शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ' – का विरोधाभास स्पष्ट कीजिए।

उत्तर कवि ने यहाँ विरोधाभास अलंकार का प्रयोग किया है। कवि की वाणी यद्यपि शीतल है, परंतु उसके मन में विद्रोह, असंतोष का भाव प्रबल है। वह समाज की व्यवस्था से संतुष्ट नहीं है। वह प्रेम-रहित संसार को अस्वीकार करता है। अतः अपनी वाणी के माध्यम से अपनी असंतुष्टि को व्यक्त करता है। वह अपने कवित्व धर्म को ईमानदारी से निभाते हुए लोगों को जाग्रत कर रहा है।

5. *बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?* [*CBSE (Outside), 2008*]

उत्तर पक्षी दिन भर भोजन की तलाश में भटकते फिरते हैं। उनके बच्चे घोंसलों में माता-पिता की राह देखते रहते हैं कि माता-पिता उनके लिए दाना लाएँगे और उनका पेट भरेंगे। साथ-साथ वे माँ-बाप के स्नेहिल स्पर्श पाने के लिए प्रतीक्षा करते हैं। छोटे बच्चों को माता-पिता का स्पर्श व उनकी गोद में बैठना, उनका प्रेम-प्रदर्शन भी असीम आनंद देता है। इन सबकी पूर्ति के लिए वे नीड़ों से झाँकते हैं।

6. *'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'–की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?*

उत्तर 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है'–की आवृत्ति से यह प्रकट होता है कि लक्ष्य की तरफ बढ़ते मनुष्य को समय बीतने का पता नहीं चलता। पथिक लक्ष्य तक पहुँचने के लिए आतुर होता है। इस पंक्ति की आवृत्ति समय के निरंतर चलायमान प्रवृत्ति को भी बताती है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। अत: समय के साथ स्वयं को समायोजित करना प्राणियों के लिए आवश्यक है।

कविता के आस–पास

संसार में कष्टों को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है?

उत्तर सामाजिक प्राणी होने के नाते मनुष्य हर संबंध का निर्वाह करता है। उसे जीवन में अनेक तरह के कष्टों का सामना करना पड़ता है। कष्ट सहना मानव की नियति है। सुख-दुख समय के अनुसार आते-जाते रहते हैं। मनुष्य को दुख से परेशान नहीं होना चाहिए क्योंकि दुखों के बिना सुख की सच्ची अनुभूति नहीं पाई जा सकती। अत: मनुष्य को संतुलित तथा सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाकर जीवन को उल्लासपूर्ण बनाना चाहिए। निरंतर काम में लगे रहकर कष्टों को भुलाया जा सकता है।

अन्य हल प्रश्न

लघूत्तरात्मक प्रश्न

1. *'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के किन पक्षों को उभारा है?* [*CBSE Sample Paper, 2015*]

उत्तर 'आत्मपरिचय' कविता में कवि हरिवंश राय बच्चन ने अपने व्यक्तित्व के निम्नलिखित पक्षों को उभारा है–

(*i*) कवि अपने जीवन में मिली आशाओं-निराशाओं से संतुष्ट है।

(*ii*) वह (कवि) अपनी धुन में मस्त रहने वाला व्यक्ति है।

(*iii*) कवि संसार को मिथ्या समझते हुए हानि-लाभ, यश-अपयश, सुख-दुख को समान समझता है।

(*iv*) कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह वाणी के माध्यम से अपना आक्रोश प्रकट करता है।

2. *'आत्मपरिचय' कविता पर प्रतिपाद्य लिखिए।* [*CBSE (Delhi), 2009*]

उत्तर 'आत्मपरिचय' कविता के रचयिता का मानना है कि स्वयं को जानना दुनिया को जानने से ज़्यादा कठिन है। समाज से व्यक्ति का नाता खट्टा-मीठा तो होता ही है। संसार से पूरी तरह निरपेक्ष रहना संभव नहीं। दुनिया अपने व्यंग्य-बाण तथा शासन-प्रशासन से चाहे जितना कष्ट दे, पर दुनिया से कटकर मनुष्य रह भी नहीं पाता क्योंकि उसकी अपनी अस्मिता, अपनी पहचान का उत्स, उसका परिवेश ही उसकी दुनिया है। वह अपना परिचय देते हुए लगातार दुनिया से अपने द्विधात्मक और द्वंद्वात्मक संबंधों का मर्म उद्घाटित करता चलता है। यह पूरी कविता का सार एक पंक्ति में कह देता है कि दुनिया से मेरा संबंध प्रीतिकलह का है, मेरा जीवन विरुद्धों का सामंजस्य है।

3. *'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!' कविता का उद्देश्य बताइए।*

उत्तर यह गीत प्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन की कृति **निशा-निमंत्रण** से उद्धृत है। इस गीत में कवि प्रकृति की दैनिक परिवर्तनशीलता के संदर्भ में प्राणी-वर्ग के धड़कते हृदय को सुनने की काव्यात्मक कोशिश को व्यक्त करता है। किसी प्रिय आलंबन या विषय से भावी साक्षात्कार का आश्वासन ही हमारे प्रयास के पगों की गति में चंचलता यानी तेज़ी भर सकता है। इससे हम शिथिलता और फिर जड़ता को प्राप्त होने से बच जाते हैं। यह गीत इस बड़े सत्य के साथ समय के गुज़रते जाने के एहसास में लक्ष्य-प्राप्ति के लिए कुछ कर गुज़रने का जज़्बा भी लिए हुए है।

4. *'आत्मपरिचय' कविता को दृष्टि में रखते हुए कवि के कथ्य को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।*

उत्तर 'आत्मपरिचय' कविता में कवि कहता है कि यद्यपि वह सांसारिक कठिनाइयों से जूझ रहा है, फिर भी वह इस जीवन से प्यार करता है। वह अपनी आशाओं और निराशाओं से संतुष्ट है। वह संसार से मिले प्रेम व स्नेह की परवाह नहीं करता, क्योंकि संसार उन्हीं लोगों की जयकार करता है जो उसकी इच्छानुसार व्यवहार करते हैं। वह अपनी धुन में रहने वाला व्यक्ति है। कवि संतोषी प्रवृत्ति का है। वह अपनी वाणी के ज़रिये अपना आक्रोश व्यक्त करता है। उसकी व्यथा शब्दों के माध्यम से प्रकट होती है तो संसार उसे गाना मानता है। वह संसार को अपने गीतों, द्वंद्वों के माध्यम से प्रसन्न करने का प्रयास करता है। कवि सभी को सामंजस्य बनाए रखने के लिए कहता है।

5. *कौन-सा विचार दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदमों को धीमा कर देता है? 'बच्चन' के गीत के आधार पर उत्तर दीजिए।* [CBSE (Outside), 2009]

उत्तर कवि एकाकी जीवन व्यतीत कर रहा है। शाम के समय उसके मन में विचार उठता है कि उसके आने के इंतज़ार में व्याकुल होने वाला कोई नहीं है। अतः वह किसके लिए तेज़ी से घर जाने की कोशिश करे। शाम होते ही रात हो जाएगी और कवि की विरह-व्यथा बढ़ने से उसका हृदय बेचैन हो जाएगा। इस प्रकार के विचार आते ही दिन ढलने के बाद लौट रहे पंथी के कदम धीमे हो जाते हैं।

6. *यदि मंज़िल दूर हो तो लोगों की वहाँ पहुँचने की मानसिकता कैसी होती है?*

उत्तर मंज़िल दूर होने पर लोगों में उदासीनता का भाव आ जाता है। कभी-कभी उनके मन में निराशा भी आ जाती है। मंज़िल की दूरी के कारण कुछ लोग घबराकर प्रयास करना छोड़ देते हैं। कुछ व्यर्थ के तर्क-वितर्क में उलझकर रह जाते हैं। मनुष्य आशा व निराशा के बीच झूलता रहता है।

7. *कवि को संसार अपूर्ण क्यों लगता है?*

उत्तर कवि भावनाओं को प्रमुखता देता है। वह सांसारिक बंधनों को नहीं मानता। वह वर्तमान संसार को उसकी शुष्कता एवं नीरसता के कारण नापसंद करता है। वह बार-बार वह अपनी कल्पना का संसार बनाता है तथा प्रेम में बाधक बनने पर उन्हें मिटा देता है। वह प्रेम को सम्मान देने वाले संसार की रचना करना चाहता है।

8. *निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–* [CBSE (Delhi), 2013]

मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ,
मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ,
जग पूछ रहा उनको, जो जग की गाते,
मैं अपने मन का गान किया करता हूँ।

मैं निज उर के उद्गार लिए फिरता हूँ,
मैं निज उर के उपहार लिए फिरता हूँ,
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

(क) *कवि ने 'स्नेह' को 'सुरा' क्यों कहा है? संसार के प्रति उसके नकारात्मक दृष्टिकोण का क्या कारण है?*
(ख) *संसार किनको महत्त्व देता है? कवि को वह महत्त्व क्यों नहीं दिया जाता?*
(ग) *'उद्गार' और 'उपहार' कवि को क्यों प्रिय हैं?*
(घ) *आशय स्पष्ट कीजिए :*
है यह अपूर्ण संसार न मुझको भाता
मैं स्वप्नों का संसार लिए फिरता हूँ।

उत्तर (क) कवि ने 'स्नेह' को 'सुरा' इसलिए कहा है क्योंकि वह प्रेम की मादकता में डूब जाता है। इस मादकता के कारण उसे सांसारिक कष्टों की परवाह नहीं रह जाती।
(ख) संसार उन लोगों को महत्त्व देता है जो सांसारिकता में डूबे रहते हैं और सांसारिकता को ही सर्वोत्तम मानते हैं। कवि सांसारिकता से दूर रहता है, इसलिए संसार कवि को महत्त्व नहीं देता।
(ग) कवि को उद्गार इसलिए पसंद है क्योंकि इस उद्गार में उसके मन के भाव समाए हुए हैं, जिन्हें वह दुनिया को देना चाहता है। उसे उपहार इसलिए पसंद हैं, क्योंकि उसके हृदय रूपी उपहार में कोमल भाव समाए हुए हैं।
(घ) **आशय**–कवि को लगता है कि बाहरी संसार प्रेम के बिना अपूर्ण है। संसार में प्रेम का अभाव है, इसलिए संसार उसे नहीं भाता। कवि के मन में प्रेम से परिपूर्ण संसार का एक सपना है जिसे वह साकार रूप देना चाहता है।

9. *निम्नलिखित काव्य-पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य पर प्रकाश डालिए–*

मुझसे मिलने को कौन विकल?
मैं होऊँ किसके हित चंचल?
यह प्रश्न शिथिल करता पग को, भरता उर में विह्वलता है!
दिन जल्दी-जल्दी ढलता है!

उत्तर **भावसौंदर्य**— शाम निकट जानकर प्राणी अपने-अपने घर आने को उद्धृत हैं, क्योंकि उनके घर पर कोई-न-कोई उनकी प्रतीक्षा कर रहा होता है। पर कवि के आने के इंतज़ार में कोई प्रतीक्षारत नहीं है, इसलिए उसके कदम शिथिल हैं।

शिल्पसौंदर्य
- प्रश्न अलंकार का प्रयोग है।
- 'जल्दी-जल्दी' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
- सरल, सहज, प्रवाहमयी भाषा भावाभिव्यक्ति के अनुकूल है।
- तत्सम शब्दों का प्रयोग है।

10. *'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता का प्रतिपाद्य स्पष्ट कीजिए।* [CBSE (Delhi), 2015, Set-II]

उत्तर 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता प्रेम की महत्ता पर प्रकाश डालती है। प्रेम की तरंग ही मानव के जीवन में उमंग और भावना की हिलोर पैदा करती है। प्रेम के कारण ही मनुष्य को लगता है कि दिन जल्दी-जल्दी बीता